(ii) **अत्यधिक आशावादी** :- अत्यधिक आशावाद से विश्व की समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता है। 1919 के बाद अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का झुकाव अत्यधिक आशावादी था जिसका परिणाम यह हुआ कि द्वितीय विश्वयुद्ध होकर रहा और राष्ट्र संघ कुछ भी नहीं कर सका, यहाँ तक कि

(iii) **अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं में आवश्यकता से अधिक विश्वास** :- अधिक विश्वास अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के लिए बुरा होता है। अब तक का इतिहास यही उदाहरण पेश करता है।

(iv) **उदारवाद दृष्टिकोण की अधिक उपयोगिता नहीं** :- इस दृष्टिकोण को अपनाने से अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएँ प्रभावविहीन हो जाती हैं। आज के युग में कोई भी राष्ट्र अपनी सम्प्रभुता को छोड़कर अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं को प्रभावी बनाना नहीं चाहता।

आदर्शवाद तथा यथार्थवाद में अंतर (Differences between idealism and realism) :-

आदर्शवाद	यथार्थवाद
1. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में आदर्शवाद अनुभव और तर्क पर आधारित नहीं है।	1. यथार्थवाद अनुभव और तर्क पर आधारित है।
2. वुडरो विल्सन तथा बर्ट्रेंड रसल हैं आदर्शवाद के समर्थक हैं।	2. जार्ज एफ० केनन, मारगेंथाऊ समकालीन समर्थक हैं।
3. आदर्शवादी शक्ति राजनीति को इतिहास तथा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का एक अस्थायी पक्ष मानते हैं।	3. यथार्थवाद शक्ति संघर्ष के स्थायित्व को स्वीकार करता है।
4. काल्पनिक उड़ानों और अमूर्त मान्यताओं में विश्वास करता है।	4. यथार्थवाद वास्तविकता में विश्वास करता है। विश्व परस्पर विरोधी हितों और स्वार्थों का रंगमंच है जो आपस में टकराते हैं।
5. आदर्शवाद अन्तर्राष्ट्रीयता से सम्बन्ध रखता है।	5. यथार्थवाद राष्ट्रीयता से संबद्ध है। यथार्थवादी नीतियाँ शांति-विरोधी तथा राष्ट्रीय शक्ति के प्रसार को अपना लक्ष्य मानती हैं।

निष्कर्ष (Conclusion) :- आज के युग में यथार्थवादी और आदर्शवादी दृष्टिकोणों के सामंजस्य के द्वारा ही अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन के प्रति संतुलित दृष्टिकोण विकसित हो सकेगा। राजनेता भी नैतिक मूल्यों से रहित नीति अपनाकर तथा कटु आलोचनाओं से बचकर कार्य करें। हालाँकि अभी का समय दोनों से ऊपर उठकर कार्य करने का है। इसके लिए बीच की कड़ी, न तो यथार्थवाद और न उदारवाद बल्कि समन्वयवाद की नीति अपनाकर वर्तमान राजनीति की ओर रुख अपनाना है इसी में विश्व को शांति मिलेगी।

डॉ० राजू मोची
विभागाध्यक्ष - राजनीति विज्ञान
डी.के. कॉलेज, डुमराँव
दिनांक - 12/05/2020

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

आदर्शवादी दृष्टिकोण
(Idealistic Approach)

1

विभिन्न दार्शनिक दृष्टिकोणों में आदर्शवादी दृष्टिकोण का बहुत अधिक महत्व है। इस दृष्टिकोण के अनुसार शक्ति-राजनीति (power Politics) इतिहास तथा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का एक अस्थायी पक्ष है। आदर्शवादी विचारक समाज के क्रमिक विकास में विश्वास करते हैं। उनकी दृष्टि में यथार्थवाद एक ऐसी अवधारणा है जो इतिहास के वास्तविक अर्थ को तोड़ने मरोड़ने तथा भ्रष्ट करने वाली है। वे एक ऐसे भविष्य की कल्पना करते हैं जो विश्व में शक्ति-राजनीति, अनैतिकता तथा हिंसा का अभाव हो।

राजनीतिक आदर्शवाद के अनुसार कुछ सर्वमान्य सैद्धांतिक मान्यताओं के आधार पर विश्व में एक नैतिक और बुद्धिवादी व्यवस्था स्थापित की जा सकती है। इस दृष्टिकोण का सिद्धांत मानव स्वभाव की मूलतः अच्छाई में अडिग विश्वास है। यह विश्व में घटित होनेवाली दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं एवं असफलताओं का कारण मानव अज्ञान और अविवेकपूर्ण व्यवहार तथा भ्रष्ट की ओर वादी सामाजिक व्यवस्थाओं को मानता है। इसके लिए वह समुचित शिक्षा, सुधार और आवश्यकतानुसार प्रचलित बुराइयों से निबटने के लिए शक्ति के प्रयोग में विश्वास रखता है।

आदर्शवादी दृष्टिकोण का विकास (Evolution of Idealistic approach) :- अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में इस दृष्टिकोण का विकास 18वीं तथा 19वीं शताब्दियों में काफी प्रचलित था। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद इसे पुनर्जीवित किया। अमेरिकी तथा फ्रांसीसी क्रांतियों ने भी इसके विकास में सहायता पहुँचायी। प्रारंभिक आदर्शवादी विचारकों में कॉन्डोरसेट (Condorcet) का नाम उल्लेखनीय है। आधुनिक आदर्शवादी विचारकों में वुडरो विल्सन तथा बर्ट्रेंड रसल का नाम प्रमुख है।

आदर्शवादी दृष्टिकोण का मूल्यांकन (Evaluation of Idealistic approach) :- उपर्युक्त तथ्यों के विवेचन से यह स्पष्ट है कि आदर्शवादी दृष्टिकोण अन्तर्राष्ट्रीय जगत में आदर्शवाद की दुहाई देकर सब विश्व को युद्ध तथा अन्याय से रहित बनाना चाहता है। आदर्शवादी दृष्टिकोण के लक्षणों को हम निम्नलिखित रूपों में रख सकते हैं। —

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

(i) अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं का प्रभाव :- (Influence of International Institutions) :- आदर्शवादी दृष्टिकोण का सफल हो जाने के बाद, अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं का प्रभाव उनके बनाने वालों पर स्थापित हो जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएँ प्रभावी ढंग से बनाने वालों का मार्गदर्शन करती हैं और इनकी इच्छा ही निर्णायक स्थान ग्रहण कर लेती है।

(ii) अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का सुदृढ़ीकरण (Consolidation of International organization) :- इसके अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों को मजबूती मिलती है। उदाहरणार्थ संयुक्त राष्ट्र बड़े पैमाने पर विभिन्न साधनों को अपनाकर अन्तर्राष्ट्रीय जगत की समस्याओं के समाधान का प्रयास कर रहा है यह आदर्शवादी दृष्टिकोण की ही देन है। संयुक्त राष्ट्र के महासचिव महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं और विश्व के सारे राष्ट्र के प्रति अपनी आस्था को प्रकट करना चाहते हैं। संयुक्त राष्ट्र की बढ़ती सदस्य संख्या अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के सुदृढ़ीकरण को स्पष्ट करती है।

(iii) विश्व-कुटुम्ब की भावना का विकास (Evolution of the feeling of world family) :- इस दृष्टिकोण की सहायता से अन्तर्राष्ट्रीय जगत में विश्व कुटुम्ब की भावना का विकास किया जा सकता है। विभिन्न राष्ट्रों में विश्व कुटुम्ब की भावना आने से वसुधैव कुटुम्बकम की भावना जागृत हो सकेगी। इससे अन्तर्राष्ट्रीय जगत में भ्रातृत्व का फैलाव होगा, अमन-चैन में वृद्धि होगी जिससे जनता सुख-चैन की नींद सोयेगा।

(iv) अन्तर्राष्ट्रीय शांति को बढ़ावा (Encouragement of International peace) विश्व कुटुम्ब आने से अमन-चैन में वृद्धि होगी जिससे पूरे विश्व शांति सह अस्तित्व की भावना कायम हो जायेगी।

(v) विश्वयुद्ध और तनाव की समाप्ति :- (End of world War and tension) :- आदर्शवादी अपने आदर्श का परिचय देकर विश्व में शांति का मार्ग प्रशस्त किया है जिससे तनाव समाप्त हो जायेगा और विश्वयुद्ध की संभावना भी नहीं बनेगी।

दोष (Demerits) :- आदर्शवादी दृष्टि के ढेर सारे फायदे हैं लेकिन कुछ त्रुटियाँ भी हैं जिससे हम इस रूप में ले सकते हैं

(1) कट्टर आदर्शवादी :- कट्टर आदर्शवादी रुख अपनाकर अनन्त निराशा की ओर ले जाता है। उदाहरण के लिए, हम विश्व की उन ज्वलंत समस्याओं को ले सकते हैं जिसके लिए संयुक्त राष्ट्र अभी तक कुछ नहीं कर सका है।

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA